

ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे च (को०)

प्रासादात् प्रैवाते । आसनात् प्रैवाते । प्रासादमारुह्य  
आसने उपाविश्य प्रैवाते इत्यर्थः । श्वशुरात् जिह्वेति ।  
श्वशुरं कर्म लज्जते इत्यर्थः । गन्धमानादि क्रिया  
कारक विभक्तीनां निमित्तम् । कस्मात् त्वं, नदमाः

ल्यप का लोप होने पर अर्थात् ल्यप्

प्रत्ययान्त शब्द के अध्याहार होने की स्थिति में  
उसके कर्म और अधिकरण के पञ्चमी होती है।  
प्रासादात् प्रैवाते (राजा) का अर्थ है। प्रासादमारुह्य  
प्रैवाते । राजा प्रासाद (महल) पर चढ़कर देखता है,  
इसमें लुप्त ल्यप् (ल्यप्) प्रत्ययान्त (आरुह्य) क्रिया  
का कर्म प्रासाद है, अतः उसमें पञ्चमी होती है।  
आसनात् प्रैवाते (घटिः) अर्थात् आसन पर बैठा देखता है।  
इसमें लुप्त ल्यप् प्रत्ययान्त । उपाविश्य । क्रिया का  
अधिकरण आसन है, अतः उसमें पञ्चमी होती है।  
जिह्वेति श्वशुर श्वशुरात् (शुभा) = पुत्रवधू श्वशुर  
को देखकर लज्जित होती है।

यत्तच्छाश्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी (को०)

तद्युक्तात्तदध्वनः प्रथमा सप्तम्यौ (को०)

कालात् सप्तमी च वक्तव्या (को०)

जिसके आधार मानकर अध्व (मार्ग)

और काल (समय) का निर्माण हो उस सीमावाचक  
शब्द में पञ्चमी विभक्ति हो। उस मार्ग (सीमा)

सूचक पद से युक्त मार्गवाचक शब्द से प्रथमा  
और सप्तमी हो। उस कालसीमा - सूचक पद से

युक्त कालवाचक शब्द से सप्तमी कहनी  
चाहिए। वनात् शमी योजनं, योजने वा (वर्तते)

